डिजिटल दैनिक
साहित्य 24
www.sahitya24.com
राष्ट्रीय संस्करण
साहित्य कला और संस्कृति को समर्पित एक डिजिटल अभियान
वर्ष-05, अंक-02 | पृष्ठ-4 | डिजिटल अंक-04 | बुधवार, 12 अगस्त, 2026 | संपादक हरिप्रकाश पाण्डेय | मूल्य 0, निःशुल्क

मन्नै वोहै हरियाणा चाहिए, सभ रंग ढाल पुराणा चाहिए

सांझा साहित्य मंच

करनाल। सांझा साहित्व मंच की काव्य संगोष्ठी का आयोजन सेक्टर 12 हुडा वर्कर यूनियन कार्यालय में किया गया। बैठक में साँझा साहित्य मंच द्वारा प्रकाशित ऑनलाइन साहित्यिक कलम संवाद त्रैमासिक का विमोचन किया गया।कार्यक्रम की अध्यक्षता डा. सतपाल पाराशर कैथल ने की।विशिष्ट अतिथि प्रो. मनजीत खान भावडिया रहे। मुख्य अतिथि के रूप में अजय जोशी पानीपत पहुंचे।

मंच संचालन सतविंद्र कुमार राणा ने किया।

कार्यक्रम में वरिष्ठ शायर कमर रईस, हरबंस पथिक,गुरमुख सिंह वड़ैच,डॉक्टर कांता वर्मा, डॉक्टर दलीप खरैरा विशेष भूमिका में रहे।कार्यक्रम में मंच ने एक नई शुरूआत करते हुए दो श्रोताओं को भी सम्मानित किया,जिसमें रोशन लाल गुप्ता,नवीन कुमार वर्मा व साथ ही अध्यक्ष,विशिष्ट अतिथि और मुख्य अतिथि को भी सम्मानित किया गया।

काव्य-गोष्ठी काव्य पंक्तियाँ इस तरह रही---

कृष्ण कुमार निर्माण ने कहा अपनी भूख यों भगाने लगे लोग, खुशियां और की खाने लोग।

नीलम नरेश बोली सरफरोशी की तमन्ना, अब हमारे दिल में नहीं।

डा. राजपाल भारतीय ने फरमाया पंजीवाद की चोट।

धमेंद्र अरोड़ा मुसाफिर ने कहा सदा कामयाबी मिले हौंसलों से, नहीं हार मानो गमे आंधियों से।

दुलीचंद रमन बोले आपा धापी अपार है, तथाकथित ज्ञान का प्रसार है, जरा संभल कर चलिए ये सूचनाओं का संसार है।

नरेश लाभ ने फरमाया प्रकृति पूजक सदैव रहे वे शांत जीवन बिताते हैं, निर्भय मित्रभाव से सबको गले लगाते हैं।

कमल किशोर ने कहा वाजिब नहीं है हद से बढकर झुक जाना राह ए मोहब्बत में, ज्यादा झुकी हुई शाखें अक्सर काट दी जाती हैं।

गुरमुख सिंह वड़ैच बोले माना कि पहुंचती नहीं है तुम तक आंच हमारी, इसका मतलब ये तो नहीं कि सुलगते नहीं है हम।

डा. कांता वर्मा ने फरमाया आजादी है हक तुम्हारा लडकर लेना होगा, काम आएगा लहू कौम के, हंसकर देना होगा।

खान मनजीत भावडि?ा ने कहा यानी उमर म्ह सीरी लाग्यै, जबर भरोटा ठाया, दिया दस का नोट हाथ म्ह सौ पै गुंठा लाया।

डा. सतपाल पराशर आनंद बोले मनै वोहे हरियाणा चाहिए, सब रंग ढाल पुराणा चाहिए।

डा. दलीप खरेरा ने फरमाया एक रब की संतान है हम सब इंसान हैं, मजहब जुदा तो क्या, वतन तो हिंदुस्तान है।

हरबंस पथिक ने कहा इश्क की गलियों में खुद को ढूंढने निकले थे हम, चर्चे हमारे कार के हमेशा हमें भवते रहे।

विनोद वत्स बोले पर्वत सी हर पीर उठाई जा सकती है, हर मुश्किल आसान बनाई जा सकती है।

आशीष नाज ने फरमाया ये कैसे मोड़ पर आकर रूकी है जिंदगी अपनी, न मैं ही बन सकता इसका न ये ही हो सकी अपनी।

मनोज शब्दसागर ने कहा ये दौर भी क्या दौर है, मुश्किलों की कश्मकश हर और है।

प्रवीण जन्नत बोले सबकी हमदिल होती हैं किताबें, संग संग हसंती रोती हैं किताबें।

भारत भूषण वर्मा ने कहा हे जन गण मन के अधिनायक, बने हम देश के लायक, अखंड भारत को जो तोड़े नहीं, आतंकी खलनायक।

गार्मी वशिष्ठ ने फरमाया कभी देखा है श्रम करते श्रमिकों को, स्त्रियों को अधनिकों को।

ओमवीर काजल बोले उम्र भी खेलन खावण की, यारां मैं गावण की, पर उसनै तो जिद पकड़ी थी देश आजाद करावण की।

डा. कमर रईस ने कहा हर खुशी तुझ पे वार दी मैंने, जिंदगी यूं गुजार दी मैंने।

सुदेश कुमारी बोली देशभक्ति कोई ताबीज नहीं है, जो गले में बांधते ही देशभक्त हो गए।

डा. वनिता चोपड़ा ने कहा वलि का तुम बनो ये भी तो संभव है दोस्त, तेग लहराने से पहले भी सींचना भी जर सा।

इस अवसर पर मनोज मधुरभाषी,लाभ सिंह आर्य,नवीन कुमार वर्मा,शिवम कृष्ण,समर्पित निनानिया,ऋषिपाल और सतविंदर राणा ने भी काव्य पाठ किया

जुड़िए साहित्य 24 के विभिन्न आयामों से

पब्लिकेशन

अपनी पुस्तक प्रकाशित करें और अपने साहित्य को नई पहचान दें।

ओपन माइक

अपनी रचनाएं साझा करें और मंच पर अपनी पहचान बनाएं।

कवि सम्मेलन

कवियों का सम्मान, साहित्य का उत्सव, संस्कृति का संगम।

साहित्य संसार पत्रिका

मासिक ई-पत्रिका जो साहित्य की दुनिया से जोड़ती है।

SAHITY 24 साहित्यिक न्यूज पोर्टल

साहित्य, संस्कृति और समाचारों का प्रमुख ऑनलाइन मंच।

साहित्य 24 दैनिक डिजिटल अखबार

प्रतिदिन की साहित्यिक, सांस्कृतिक और सामाजिक खबरें आपके साथ।

बुक स्टाल

पुस्तकों का प्रदर्शन और बिक्री आपके शहर और कार्यक्रमों में।

साहित्य 24 स्टूडियो

रिकॉर्डिंग, इंटरव्यू, पॉडकास्ट, कविता पाठ और वीडियो प्रोडक्शन की सुविधा।

हमारे विभिन्न प्रकल्प

पुस्तक प्रकाशन | कवि सम्मेलन | साहित्यिक कार्यक्रम | वेबिनार / ऑनलाइन आयोजन | रचनात्मक लेखन कार्यशाला | डिजिटल मीडिया प्रचार

साहित्य 24
साहित्य से समाज तक...

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

9315701112
www.sahitya 24.com
saahitya24@gmail.com

देश के लोकप्रिय साहित्यिक मंच

साहित्य 24

द्वारा आयोजित

काव्य गगन

सीजन 4

शब्दों का उत्सव... भावों का आकाश...

पूर्ण रुप से ऑनलाइन कार्यक्रम

- 24 टीमें देशभर से चयनित प्रतिभागी
- हर टीम में संचालक सहित 6 लोगों की टीम
- 5 जूरी सदस्य तथा 1 मुख्य जुरी मेंबर
- श्रेष्ठ प्रतिभाओं को आकर्षक पुरस्कार

★ स्पॉन्सर बनें और जुड़ें देश के सबसे बड़े ऑनलाइन काव्य महोत्सब से ★

टाइटल स्पॉन्सर
- ★ कार्यक्रम का टाइटल आपके नाम से
- ★ सभी प्रचार सामग्री में प्रमुख स्थान
- ★ उद्घाटन/समापन में विशेष उल्लेख
- ★ डिजिटल ब्रांडिंग एवं विशेष प्रमोशन

टीम स्पॉन्सर
- ★ एक या अधिक टीमों के नाम आयके नाम से
- ★ सभी टीम पोस्टर, वीडियो में ब्रांडिंग
- ★ प्रतिभागियों के साथ प्रत्यक्ष जुड़ाव
- ★ सोशल मीडिया पर विशेष प्रचार

गिफ्ट स्पॉन्सर
- ★ प्रतिभागियों को दिए जाने वाले सभी उपहार आयके नाम से
- ★ डिजिटल वर्चुअल बैकड्रॉप पर ब्रांडिंग
- ★ सोशल मीडिया व पोस्टर में विशेष उल्लेख
- ★ ब्रांड की सकारात्मक पहचान

ट्रॉफी स्पॉन्सर
- ★ सभी विजेताओं की ट्रॉफी आयके नाम से
- ★ ट्रॉफी पर ब्रांड/लोगो प्रदर्शित
- ★ समापन समारोह में विशेष धन्यवाद
- ★ दिर्घकालिक ब्रांड वैल्यू

आपको क्यों जुड़ना चाहिए?

देशभर में ब्रांड की पहचान | लाखों साहित्य प्रेमियों तक पहुँच | सकारात्मक छवि और विश्वसनीयता | डिजिटल प्रमोशन और ब्रांड विजिबिलिटी | साहित्य, संस्कृति और समाज से जुड़ाव

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें 9315701112 www.sahitya24.com

आइए, शब्दों के इस महाउत्सव को मिलकर बनाएं और भी यादगार...

Supported by: URDU ACADEMY, DELHI (Govt. of Delhi) اردو اکادمی (دہلی سرکار)

ON THE OCCASION OF
INDEPENDENCE DAY

Mohd Shehzad
Chief Guest

Mirza Mehtab Baig
Spl. Guest

Dr. Shahabuddin
Spl. Guest

Aftab Ali
Spl. Guest

ASWES
امن سوشل ویلفیئر اینڈ ایجوکیشنل سوسائٹی (رجسٹرڈ)

Presents

Babbu Choudhary
Social Worker

Haji Naseeb ul Hasan
Member Society

Shamim Alam
Member Society

Irfan Quassar
Member Society

Iqbal Ashhar
Sadarat

Saare jahaan se achchha... | सारे जहाँ से अच्छा... | سارے جہاں سے اچّھا....

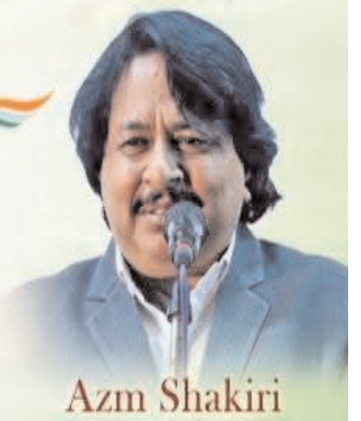
Azm Shakiri

Prof.
Rehman Musavvir
Nizamat

Saleem kashif
Convenor
9899000997

Adil Rasheed, Waseem Jahangirabadi, Shakir Dehlvi, Danish Ayubi, Sharaf Nanparvi, Shahrukh Abeer, Junaid Akhtar
Imran Raahi, Imran Faiz, Sarita Jain, Poonam Meera, Reshma Zaidi, Dr. Shubhi Saxena, Zareen Siddique

High-Tea 05:00 PM

Wednesday | 12th August
05:30 PM Onwards

all india mushaira

Aiwan-e-Ghalib Auditorium
Mata Sundari Lane, Mandi House, ITO, New Delhi

मानवीय जीवन को पर्यावरण के खतरों से बचाने के लिए नागरिकों की सहभागिता मील का पत्थर साबित होगी

आओ प्रकृति के साथी बनें, मिट्टी और पर्यावरण की रक्षा करें- एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

गोंदिया - वैश्विक स्तरपर आज हर देश पर्यावरण समस्याओं का सामना कर रहा है जिसका समाधान खोजने उसपर अमल करने के लिए विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सभी देश एकत्रित होकर पर्यावरण की सुरक्षा के मुद्दों पर अनेक उपायों की चर्चा कर उसके क्रियान्वयन करने में लगे हुए हैं जिसमें पेरिस समझौता सहित अनेक ऐसे समझौते शामिल हैं जो मानवीय जीवन को पर्यावरण के खतरों से बचाने के लिए मील का पत्थर साबित होंगे।

साथियों बात अगर हम भारत की करें तो भारत न केवल हर अन्तर्राष्ट्रीय मंचों से पर्यावरण की सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान और सहयोग प्रदान कर रहा है बल्कि घरेलू स्तरपर भी अनेक लक्ष्यों को भी अपने टारगेट समय से पूर्व पूर्ण करने की ओर अग्रसर है। राष्ट्रीय स्तरपर पर्यावरण की सुरक्षा के लिए अनेक सामाजिक, सहकारी, सरकारी, निजी संस्थाएं कार्य कर रही है परंतु अगर वास्तव में हमें पर्यावरण को सुरक्षित करना है तो हर नागरिक को इस पर्यावरण सुरक्षा संबंधी यज्ञ में अपने सहयोग रूपी आहुति देनी होगी और अभियान चलाकर, आओ मिट्टी और पर्यावरण की रक्षा करें, का नारा देना होगा! मानव को प्रकृति का साथी बनना होगा तथा अनुकूल मानवीय सभ्यता पर्यावरण संबंधित समस्याओं को दूर कर खुशहाल समृद्धि टिकाऊ भविष्य का निर्माण करेगी ऐसी सोच रखनी होगी।

साथियों बात अगर माननीय केंद्रीय रक्षा मंत्री द्वारा एक कार्यक्रम में संबोधन की करें तो पीआईबी के अनुसार उन्होंने भी, विज्ञान के क्षेत्र में नईप्रौद्योगिकीयों को खोजने तथा ऐसे नवोन्मेषण करने की अपील की जो पर्यावरण के अनूकूल मूल्यों को बनाये रखेंगे। उन्होंने कहा, हमें प्रकृति का साथी बन जाना चाहिए तथा जीवों के साथ साथ प्रकृति के निर्जीव तत्वों के प्रति भी श्रद्धा और सम्मान की भावना रखनी चाहिए। मुझे पूरा विश्वास है कि धीरे धीरे मानव सभ्यता हमारे समय की पर्यावरण संबंधित समस्याओं को दूर करेगी तथा हम सभी के लिए एक खुशहाल, समृद्ध, न्यायसंगत तथा टिकाऊ भविष्य का निर्माण करेगी। उन्होंने पर्यावरण के क्षरण पर चिंता जताई और कहा कि पृथ्वी के इकोसिस्टम का निर्माण इस तरह से किया गया है कि किसी एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र में प्रभाव केवल उसी क्षेत्र तक सीमित नहीं रहता बल्कि यह पूरे विश्व को सन्निहित कर लेता है। उन्होंने कहा, उदाहरण के लिए हमारे सामने कार्बन उत्सर्जन का मामला है। भले ही यह एक देश में हो रहा हो, निश्चित रूप से यह अन्य सभी देशों को प्रभावित कर रहा है। यही कारण है कि वैश्विक पर्यावरण सुरक्षा के संबंध में, सभी शिखर सम्मेलन, सम्मेलन, संधियां तथा समझौते, चाहे वह रियो समिट हो या डेजर्टिफिकेशन से मुकाबला करने के लिए संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन, जलवायु परिवर्तन कन्वेंशन, क्योटो प्रोटोकॉल या पेरिस सम्मेलन, वे सभी समान रूप से एक सुर में कार्य करने के लिए विश्व के सभी देशों का मार्गदर्शन करते हैं। एक जिम्मेदार राष्ट्र के रूप में, भारत ने अपनी परंपरा और संस्कृति से निर्देशित होकर निरंतर मृदा संरक्षण क लिए कार्य किया है। केवल मिट्टी पर ध्यान केंद्रित करने के जरिये मृदा संरक्षण नहीं किया जा सकता। हमने इससे जुड़े सभी घटकों जैसे वनीकरण, वन्य जीवन, आर्द्र भूमि आदि को संरक्षित करने और बढ़ाने का कार्य किया है। केवल सामूहिक प्रयासों से ही सामूहिक समस्याओं का निदान संभव होगा। इसलिए, यह आवश्यक है कि हम सभी मिट्टी और पर्यावरण की रक्षा करने का प्रयास करें और एक साथ मिल कर एक बेहतर विश्व की ओर बढ़ें।उन्होंने मिट्टी बचाओ अभियान को उम्मीद की किरण बताया क्योंकि इससे यह विश्वास पैदा होता है कि इस अभियान के माध्यम से विश्व भर के लोग आने वाले समय में मृदा के स्वास्थ्य को बनाये रखने में योगदान देंगे। उन्होंने कहा कि यह अभियान न केवल मिट्टी की रक्षा करने बल्कि मानव सभ्यता एवं संस्कृति को संरक्षित करने का भी एक प्रयास है।उन्होंने पर्यावरणीय समस्याओं को दूर करने के लिए प्रेरित करने के अतिरिक्त लोगों को योग के माध्यम से अधिक प्रसन्नचित्त तथा अधिक सार्थक जीवन जीवन जीना सिखाने के लिए किए जा रहे कार्यों के लिए उनकी सराहना की। उन्होंने कहा, वसुधैव कुटुम्बकम का संदेश देकर भारत ने अपनी सीमा के भीतर रहने वाले लोगों को ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व के लोगों को अपना परिवार माना है। श्री सद्गुरु ने अपने काम से निश्चित रूप से एक नया पर्यावरण आंदोलन पैदा करने के लिए वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को जीवंत बनाया है। उन्होंने कहा, वह मिट्टी बचाओ जैसे अभियानों तथा अध्यात्मिकता के माध्यम से दिव्य संदेश दे रहे हैं।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि आओ प्रकृति के साथी बनें। आओ मिट्टी और पर्यावरण की रक्षा करें। मानवीय जीवन को पर्यावरण के खतरों से बचाने के लिए नागरिकों की सहभागिता मील का पत्थर साबित होगी।

संकलनकर्ता लेखक - कर विशेषज्ञ स्तंभकार एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र
9359653465

दुश्मन को भी शांति की सौगात

चुप रहने की नहीं है मेरी कभी आदत
आईना को नित्य करता हूँ मैं इबादत
जो बिना डरे सहमे करता है बात
मैं भी दर्पण को मानता हूँ अपनी तात
झुठी वाह वाही से करता हूँ मैं नफरत
दुसरे को धमकाने की ना है कोई हसरत
साधारण व्यवहार का मैं हूँ एक साथी
मेरी दुश्मन है समाज में फैली जाति पाति
बड़े बुर्जुग का करता हूँ। मैं सदा सम्मान

जो भी हैं मेरे नजर में ज्ञानी व गुणवान
माता पिता हैं मेरे लिये साक्षात भगवान
नित्य उनके चरणों में है मेरा प्रणाम
बेईमानों शैतानों से बनाता हूँ मैं दूरी
स्वार्थ जीवन की नहीं बनी मेरी मजबूरी
विद्वजनों को मेरा है नित्य नमस्कार
जिन्होंने दी है हमें एक अच्छी संस्कार
राष्ट्रहित की मैं बराबर करता हूँ बात
दुश्मन को भी दोस्ती का मेरा सौगात
नहीं चाहिये समाज में नफरत की जात
रक्षा करना रब मेरी तुम दिन हो या रात

उदय किशोर साह
मो० पो० जयपुर जिला बांका बिहार

तिरस्कार बना हथियार

आराध्या आज दिल्ली के पार्लियामेंट में अपनी द्वारा लिखी गई कविता को सुना रही करतल ध्वनि से पूरा भवन गूंज उठा।
वह कविता थी....
अपनों की फटकार को ही ढाल बना लिया,
अपनों के ताने को ही तलवार बना लिया।
जिसने कहा था तुमसे न होगा,
उसी काम को करके जग को दिखा दिया।
सबको सब कुछ नहीं मिला यहाँ,
पर हमें बहुत कुछ मिला यहाँ।
अपमान की आग में तपे,
तिरस्कार से हमें दिशा मिली।
ठुकराए जाने पर भी,
अपने पैरों पर खड़े होने की ताकत मिली।
जिन्होंने दरवाजे बंद किए,
उन्होंने हमें खिड़की से उड़ना सिखा दिया।
जिन आँसुओं से हमें रुलाया,
उसी आँसू ने कलम में ज्ञान की स्याही भर दी।
शिकायत नहीं किसी से कभी,
बस दिल से शुक्रिया कहा।
जो नहीं मिला, उसने मुझे फौलाद बना दिया।
हर तिरस्कार को मैंने हथियार बना लिया।
और आज...
जिन हाथों ने धक्का दिया था,
उन्हीं हाथों से ताली बज रही है।
जिन आँखों में अवहेलना थी,
उन्हीं आँखों में आज गर्व है।
क्योंकि गिरकर संभलना ही,
उड़ान की सबसे बड़ी सीढ़ी है।
बालिकाओं को प्रेरित करने के लिए

उसने अपनी जीवन की कहानी भी सुनाई....
आराध्या कॉलेज की सबसे मेधावी छात्रा थी। पर घर में सब कहते - लड़कियों को इतना पढ़कर क्या करना? शादी करो, घर बसाओ।
सब ताना मारते - लड़की को इतना नहीं पड़ना चाहिए कौन सा कलेक्टर बनना है फिर पढ़ा लिखा नौकरी लड़के के लिए इतना दहेज कहां से लाएंगे। पैसे बर्बाद मत करो।
एक दिन रिजल्ट आया। क्षेत्र के सभी बच्चे फेल पर आराध्य केवल पास हुई, बाकी सब साथी के फेल।
ताऊ जी ने सबके सामने कहा - देखा! कहा था न। लड़कियों की औकात चूल्हा-चौकी होती है।
आराध्या उस रात बहुत रोई। फिर आईने के सामने खड़ी होकर बोली - जिसने कहा तुमसे न होगा, उसी को करके दिखाऊंगी।
उसने ट्यूशन पढ़ाना शुरू किया। सुबह 4 बजे उठकर पढ़ाई, दिन में 3 घरों में ट्यूशन। कभी किसी के कपड़े सिल देती, उससे थोड़ा बहुत पैसा मिल जाता। अपमान की तपिश में वो तपती गई।
3 साल बाद... कड़ी मेहनत के पश्चात वह असिस्टेंट ग्रेट में बहुत उच्च स्थान पर आई और उसे दिल्ली जैसे शहर में अधिकारी पद पर नियुक्ति मिली।
अधिकारी बनते ही सबसे पहले वो उसी घर गई जहाँ उसे नालायक कहा गया था।
आराध्या ने सबके पैर छुए और कहा - शुक्रिया। आप सभी के आशीर्वाद से मैंने खिड़की से उड़ना सीख लिया।
6 महीने बाद उसने अपने गाँव में आराध्या लर्निंग सेंटर खोला। खासकर उन बच्चियों और बच्चों के लिए जिन्हें तुमसे न होगा कहा जाता ।
आज उद्घाटन पर वही ताऊ जी सबसे आगे बैठे थे। गर्व से सबको बता रहे थे - ये हमारी भतीजी है।
आराध्या ने माइक पर सिर्फ इतना कहाः
"तिरस्कार को हौसला बनाओ
जब तक हथियार न बना लो। और जब बना लेते हैं, तो वही आपको उच्च बना देता है।
बदला नहीं, बदलाव लाओ।
तिरस्कार करने वालों को करके दिखाओ। आज समाज समुदाय में बालिकाओं का तिरस्कार बना हथियार।

राधा बिष्ट

रचना मेरी

मेरी रचनाएं
मेरे आत्मज हैं,
अपना तिरस्कार मान्य है,
अपनी मान्यताओं का नही,
हेय दृष्टि डाले कोई मान्य नहीं,
आत्मा में संग्रहित, जो थीं सुरक्षित,
बोझ कैसे मान लूं कांधे का मैं,
आत्मा ही बोझ जब बन जायेगी,
उड़ जायेगी,कांधों पर मैं आ जाऊंगी,
तब तलक तो मैं सहेजूंगी इन्हें,
जीते जी अंगुली किसे थमाऊंगी,
कौन इनका मान रख पायेगा इतना,
शीश पर धर कर गले लगायेगा,
फिर अनाथालय बनेगा पुस्तकालय,

हर कृति हीरे की कांति पायेगी,
हर प्रभा में आत्मा ही मेरी मुस्कायेगी ।।

Picture of the day

बारिश की रात

ठक.. ठक.. कोई जोर से कुंडी खटखटा रहा था। आधी रात.. तूफानी हवा..मूसलाधार बारिश इस समय कौन?

हरि ने झुंझलाते हुए दरवाजा खोला.. जल से आपादमस्तक भींगा हुआ बिरजू... हाथ जोडे. खड़ा था।

क्या है..हरि झुंझला कर बोला।

घरवाली प्रसव पीड़ा से बेदम है.. अपने आटोरिक्शा में शहर के अस्पताल तक छोड़ दोगे..इतनी रात गये दूसरी सवारी कहीं नहीं मिल रही है भाई..मेरे दोस्त बिरजू गिडगिडा उठा।

मेरी गाड़ी में तेल नहीं है.. और भडाक से दरवाजा बंद ... पुरानी दुश्मनी याद आ गई हरि को।

बिरजू वापस घर लौटा.. कोई उपाय न देख घरवाली को कंधे पर उठाया... उसी आंधी पानी तूफान में चल पड़ा शहर की ओर।

मन ही मन अपने आप को कोसता... जलन के मारे वह हरदम हरि को नीचा दिखाता है फिर वह क्यों उसकी मदद करेगा.. अगले ही क्षण हरि पर भी गुस्सा आया... वह भी मुझसे डाह रखता है नहीं तो सहायता नहीं करता क्या।

थोड़ी दूर जाते ही वह लस्त पड़ गया..पीठ पर स्त्री और मन का बोझ, मूसलाधार बारिश.. तूफान में पांव आगे बढते न थे उसपर गर्भवती की चित्कार.. हे देवा. सहाय होओ... मेरी करनी का दंड इसे मत दो.. बिरजू सच्चे हृदय से देवी-देवताओं को गोहराने लगा।

उसी समय किसी गाड़ी की रौशनी दिखाई दी.. ठीक उसके बगल में आकर रुकी.. हरि ने इशारा किया, आ भाई, ऑटोरिक्शा में भाभी को लेकर बैठ जाओ ।

लेकिन तुम्हारे गाड़ी में तेल नहीं था... बिरजू अविश्वास से बोला।

वह सब बाद में पहले अस्पताल चलते हैं।

संयोग अच्छा था, हेडनर्स मौजूद थी। आधे घंटे में सिस्टर ने सूचना दी स्वस्थ बच्ची हुई है। जच्चा बच्चा स्वस्थ है... आप समय से गर्भवती को अस्पताल ले आये। आप बच्चे को देख सकते हैं।

नवजात कन्या के केहां.. केहां में दोनों मित्रों की ईर्ष्या, डाह, जलन की भावना तिरोहित हो गई।

डॉ उर्मिला सिन्हा
राँची, झारखंड

ओके राष्ट्रीय गौरव और लोकतांत्रिक अधिकार

डॉ विजय गर्ग

किसी भी लोकतांत्रिक राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति केवल उसकी सीमाएँ, सेना या अर्थव्यवस्था नहीं होती, बल्कि उसके नागरिकों की जागरूकता, संविधान के प्रति आस्था और राष्ट्र के प्रति सम्मान होता है। राष्ट्रीय गौरव और लोकतांत्रिक अधिकार एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि परस्पर पूरक हैं। जब नागरिक अपने अधिकारों का जिम्मेदारी के साथ उपयोग करते हैं और राष्ट्र के सम्मान को सर्वोपरि मानते हैं, तभी एक सशक्त, समावेशी और प्रगतिशील समाज का निर्माण होता है।

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। हमारा संविधान प्रत्येक नागरिक को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, समानता, धार्मिक स्वतंत्रता, शिक्षा का अधिकार और न्याय पाने का अधिकार प्रदान करता है। ये अधिकार लोकतंत्र की आत्मा हैं, क्योंकि इनके माध्यम से नागरिक अपनी बात रख सकते हैं, शासन से प्रश्न पूछ सकते हैं और सार्वजनिक जीवन में सक्रिय भागीदारी निभा सकते हैं। लेकिन संविधान ने यह भी स्पष्ट किया है कि अधिकारों के साथ कर्तव्य भी जुड़े होते हैं। कोई भी स्वतंत्रता निरंकुश नहीं हो सकती।

राष्ट्रीय गौरव का अर्थ केवल राष्ट्रध्वज को सलाम करना या राष्ट्रगान गाना नहीं है। इसका वास्तविक अर्थ है देश की एकता, अखंडता, विविधता, संस्कृति, लोकतांत्रिक संस्थाओं और संवैधानिक मूल्यों का सम्मान करना। राष्ट्रीय गौरव तब और मजबूत होता है जब नागरिक ईमानदारी से कर चुकाते हैं, कानून का पालन करते हैं, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करते हैं, पर्यावरण को सुरक्षित रखते हैं और सामाजिक सद्भाव बनाए रखने में योगदान देते हैं।

लोकतांत्रिक अधिकारों का सबसे महत्वपूर्ण पहलू अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है। विचारों की विविधता लोकतंत्र को जीवंत बनाती है। सरकार की नीतियों की आलोचना करना, सुधार की मांग करना और वैकल्पिक विचार प्रस्तुत करना लोकतांत्रिक व्यवस्था का स्वाभाविक हिस्सा है। किंतु यह आलोचना तथ्यपरक, जिम्मेदार और संवैधानिक मयार्दाओं के भीतर होनी चाहिए। ऐसी अभिव्यक्ति जो हिंसा, घृणा, विभाजन या राष्ट्र की सुरक्षा को नुकसान पहुँचाए, लोकतांत्रिक मूल्यों के अनुरूप नहीं मानी जा सकती।

आज सोशल मीडिया ने हर नागरिक को अपनी बात रखने का मंच दिया है। यह लोकतंत्र के लिए एक अवसर भी है और चुनौती भी। झूठी खबरें, भ्रामक सूचनाएँ, अफवाहें और घृणा फैलाने वाली सामग्री समाज में तनाव और अविश्वास पैदा कर सकती हैं। इसलिए डिजिटल युग में नागरिकों का दायित्व है कि वे किसी भी जानकारी को साझा करने से पहले उसकी सत्यता की जाँच करें और जिम्मेदार डिजिटल नागरिक बनें।

राष्ट्रीय गौरव केवल अतीत की उपलब्धियों पर गर्व करने से नहीं, बल्कि वर्तमान में सकारात्मक योगदान देने से भी बढ़ता है। जब युवा शिक्षा, नवाचार, विज्ञान, खेल, साहित्य, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक सेवा में उत्कृष्ट कार्य करते हैं, तब वे देश का सम्मान विश्व मंच पर बढ़ाते हैं। यही सच्ची राष्ट्रसेवा है।

विद्यालय और परिवार इस संतुलन को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बच्चों को केवल अधिकारों की जानकारी देना पर्याप्त नहीं है; उन्हें संविधान, कर्तव्यों, सहिष्णुता, संवाद, विविधता के सम्मान और लोकतांत्रिक मूल्यों का व्यावहारिक महत्व भी सिखाना आवश्यक है। जागरूक और संवेदनशील नागरिक ही लोकतंत्र को मजबूत बना सकते हैं।

भारत की सबसे बड़ी पहचान उसकी विविधता में एकता है। विभिन्न भाषाएँ, संस्कृतियाँ, परंपराएँ और विचार हमारे लोकतंत्र को समृद्ध बनाते हैं। जब हम मतभेदों को सम्मानपूर्वक स्वीकार करते हैं और संवाद के माध्यम से समाधान खोजते हैं, तभी लोकतंत्र और राष्ट्रीय एकता दोनों मजबूत होते हैं।

अंततः, राष्ट्रीय गौरव और लोकतांत्रिक अधिकार एक ही रथ के दो पहिए हैं। जहाँ राष्ट्रीय गौरव हमें देश के प्रति समर्पण और जिम्मेदारी का भाव देता है, वहीं लोकतांत्रिक अधिकार हमें स्वतंत्र, जागरूक और सक्रिय नागरिक बनने का अवसर प्रदान करते हैं। इन दोनों के बीच संतुलन बनाए रखना ही एक सशक्त, समृद्ध और लोकतांत्रिक भारत की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

महिला उद्यमियों की सफलता की नई कहानी

एक समय था जब व्यवसाय और उद्यमिता को मुख्यतः पुरुषों का क्षेत्र माना जाता था। महिलाओं की भूमिका को घर-परिवार तक सीमित समझा जाता था। लेकिन आज का भारत एक नई कहानी लिख रहा है। महिलाएँ न केवल शिक्षा, विज्ञान, तकनीक और प्रशासन में अपनी पहचान बना रही हैं, बल्कि उद्यमिता के क्षेत्र में भी सफलता के नए आयाम स्थापित कर रही हैं। उनकी उपलब्धियाँ यह साबित कर रही हैं कि अवसर, आत्मविश्वास और नवाचार के साथ महिलाएँ किसी भी क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकती हैं। पिछले कुछ वर्षों में भारत में महिला उद्यमिता ने उल्लेखनीय गति पकड़ी है। डिजिटल तकनीक, ई-कॉमर्स, ऑनलाइन भुगतान प्रणाली, सोशल मीडिया और सरकारी प्रोत्साहन योजनाओं ने महिलाओं के लिए व्यवसाय शुरू करना पहले की तुलना में कहीं अधिक आसान बना दिया है। अब छोटे शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएँ भी अपने उत्पादों और सेवाओं को देश-विदेश के ग्राहकों तक पहुँचा रही हैं।

महिला उद्यमियों की सफलता का सबसे बड़ा आधार उनका साहस और आत्मविश्वास है। अनेक महिलाओं ने सीमित संसाधनों, सामाजिक चुनौतियों और पारिवारिक जिम्मेदारियों के बावजूद अपने सपनों को साकार किया है। उन्होंने यह सिद्ध किया है कि सफलता केवल पूँजी से नहीं, बल्कि दृढ़ संकल्प, मेहनत और नवाचार से भी प्राप्त की जा सकती है।

आज महिलाएँ कृषि आधारित उद्योगों, हस्तशिल्प, खाद्य प्रसंस्करण, फैशन, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं, सूचना प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जैव प्रौद्योगिकी, पर्यटन और हरित उद्यमों जैसे विविध क्षेत्रों में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। अनेक महिला स्टार्टअप संस्थापक ऐसे उत्पाद और सेवाएँ विकसित कर रही हैं जो समाज की वास्तविक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करते हैं। यह नवाचार केवल आर्थिक विकास को गति नहीं देता, बल्कि रोजगार के नए अवसर भी पैदा करता है।

महिला उद्यमिता का प्रभाव केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सामाजिक भी है। जब कोई महिला आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनती है, तो उसका सकारात्मक प्रभाव पूरे परिवार और समुदाय पर पड़ता है। वह बच्चों की बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण में निवेश करती है तथा समाज में अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा बनती है। इस प्रकार महिला उद्यमिता सामाजिक समानता और समावेशी विकास को भी मजबूत करती है।

सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाएँ, स्टार्टअप प्रोत्साहन कार्यक्रम, स्वयं सहायता समूह, कौशल विकास अभियान और डिजिटल वित्तीय सेवाएँ महिलाओं को उद्यमिता की ओर प्रोत्साहित कर रही हैं। बैंकिंग सुविधाओं और सूक्ष्म वित्त तक बढ़ती पहुँच ने भी महिलाओं को अपने व्यवसाय का विस्तार करने का अवसर दिया है। हालाँकि अभी भी वित्तीय सहायता, बाजार तक पहुँच, तकनीकी प्रशिक्षण और सामाजिक रूढ़ियों जैसी चुनौतियाँ पूरी तरह समाप्त नहीं हुई हैं। इन बाधाओं को दूर करने के लिए सरकार, उद्योग, वित्तीय संस्थानों और समाज को मिलकर कार्य करना होगा।

शिक्षा और कौशल विकास महिला उद्यमिता की सफलता की मजबूत नींव हैं। यदि विद्यालयों और महाविद्यालयों में नवाचार, वित्तीय साक्षरता, डिजिटल कौशल और उद्यमिता की शिक्षा को बढ़ावा दिया जाए, तो अधिक से अधिक युवा महिलाएँ रोजगार खोजने के बजाय रोजगार देने वाली बन सकती हैं। मेंटरशिप, नेटवर्किंग और सफल महिला उद्यमियों के अनुभव भी नई पीढ़ी के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं।

डिजिटल युग ने महिलाओं के लिए अवसरों के नए द्वार खोले हैं। घर से संचालित ऑनलाइन व्यवसाय, डिजिटल मार्केटिंग, फ्रीलांसिंग, ई-कॉमर्स और वैश्विक बाजार तक पहुँच ने उद्यमिता को अधिक समावेशी बनाया है। अब भौगोलिक सीमाएँ सफलता की राह में बड़ी बाधा नहीं रहीं।

आज की महिला उद्यमी केवल अपने व्यवसाय का विस्तार नहीं कर रही, बल्कि समाज में परिवर्तन की वाहक भी बन रही है। वह नवाचार को बढ़ावा दे रही है, रोजगार का सृजन कर रही है, स्थानीय संसाधनों का बेहतर उपयोग कर रही है और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

अंततः, महिला उद्यमियों की सफलता की नई कहानी केवल व्यक्तिगत उपलब्धियों की कहानी नहीं है, बल्कि एक ऐसे भारत की कहानी है जहाँ प्रतिभा को लिंग के आधार पर नहीं, बल्कि क्षमता और परिश्रम के आधार पर पहचाना जाता है। यदि महिलाओं को समान अवसर, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, वित्तीय सहयोग और सुरक्षित व्यावसायिक वातावरण मिलता रहे, तो वे न केवल देश की अर्थव्यवस्था को नई ऊँचाइयों तक ले जाएँगी, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए आत्मविश्वास, नवाचार और नेतृत्व की नई मिसाल भी स्थापित करेंगी।

वैज्ञानिक अवलोकन की कला

डॉ विजय गर्ग

विज्ञान की शुरूआत प्रयोगशाला से नहीं, बल्कि अवलोकन से होती है। मानव इतिहास की लगभग हर महान वैज्ञानिक खोज के पीछे किसी जिज्ञासु व्यक्ति की गहरी नजर और प्रश्न पूछने की आदत रही है। आइजक न्यूटन ने गिरते हुए सेब को देखा, गैलीलियो ने दूरबीन से आकाश का अध्ययन किया, चार्ल्स डार्विन ने जीव-जंतुओं के व्यवहार का वर्षों तक अवलोकन किया और डॉ. सी. वी. रमन ने प्रकाश के प्रकीर्णन का अध्ययन करके विश्व को नई वैज्ञानिक समझ दी। इन सभी उदाहरणों से स्पष्ट है कि विज्ञान का पहला कदम है–ध्यानपूर्वक देखना।

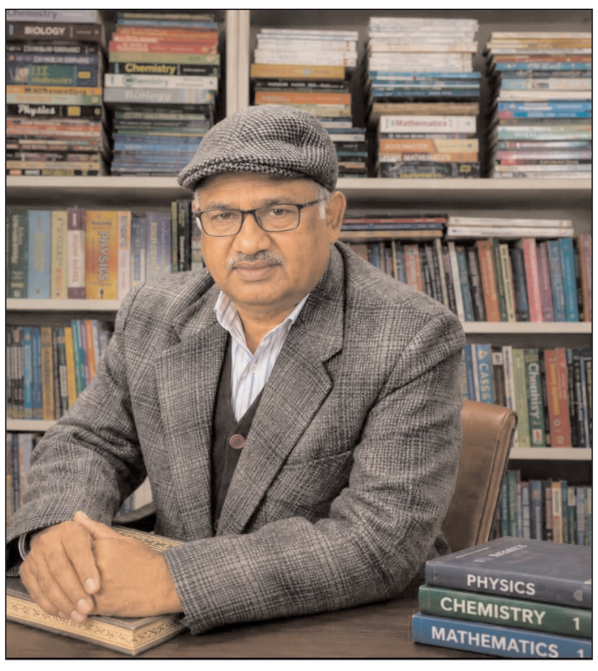

वैज्ञानिक अवलोकन केवल किसी वस्तु को देख लेना नहीं है। यह किसी घटना, वस्तु या प्रक्रिया को धैर्यपूर्वक, निष्पक्षता से और गहराई से समझने का प्रयास है। इसमें तथ्यों को बिना किसी पूर्वाग्रह के दर्ज किया जाता है, छोटी-से-छोटी बातों पर ध्यान दिया जाता है और यह जानने की कोशिश की जाती है कि कोई घटना क्यों और कैसे घटित हो रही है। यही आदत सामान्य व्यक्ति और वैज्ञानिक सोच रखने वाले व्यक्ति के बीच अंतर पैदा करती है।

हम प्रतिदिन अपने आसपास अनेक घटनाएँ देखते हैं, लेकिन अधिकांश लोग उन्हें सामान्य मानकर आगे बढ़ जाते हैं। एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने वाला व्यक्ति उन्हीं घटनाओं में नए प्रश्न खोजता है। यदि वह किसी बगीचे में जाता है तो केवल फूलों की सुंदरता नहीं देखता, बल्कि यह भी समझने का प्रयास करता है कि अलग-अलग पौधों की पत्तियाँ क्यों भिन्न होती हैं, किन-किन कीटों का आगमन होता है, सूर्य के प्रकाश का पौधों पर क्या प्रभाव पड़ता है और मिट्टी की नमी उनके विकास को कैसे प्रभावित करती है। यही जिज्ञासा नई खोजों का आधार बनती है।

इतिहास में अनेक महत्वपूर्ण खोजें केवल सूक्ष्म अवलोकन के कारण संभव हुईं। न्यूटन ने गिरते हुए सेब से गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत की ओर कदम बढ़ाया। गैलीलियो ने ग्रहों और चंद्रमाओं का अध्ययन करके ब्रह्मांड के बारे में प्रचलित धारणाओं को चुनौती दी। डार्विन ने वर्षों तक विभिन्न जीवों का अवलोकन कर विकासवाद का सिद्धांत प्रस्तुत किया। भारत के महान वैज्ञानिक डॉ. सी. वी. रमन ने प्रकाश के व्यवहार का अध्ययन करके "रमन प्रभाव" की खोज की, जिसके लिए उन्हें नोबेल पुरस्कार मिला। ये सभी उदाहरण बताते हैं कि महान खोजों की शुरूआत अक्सर एक साधारण-सी जिज्ञासा और सावधानीपूर्वक किए गए अवलोकन से होती है।

आज विज्ञान और तकनीक ने अवलोकन की क्षमता को कई गुना बढ़ा दिया है। सूक्ष्मदर्शी, दूरबीन, उपग्रह, ड्रोन, सेंसर और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे आधुनिक उपकरण हमें उन चीजों को देखने और समझने में सहायता करते हैं जो सामान्य आँखों से दिखाई नहीं देतीं। फिर भी इन सभी उपकरणों के पीछे एक जिज्ञासु और सोचने वाला मानव मस्तिष्क ही होता है। तकनीक केवल साधन है, खोज की शुरूआत आज भी वैज्ञानिक दृष्टि और अवलोकन से ही होती है।

विद्यार्थी अपने दैनिक जीवन में वैज्ञानिक अवलोकन की आदत आसानी से विकसित कर सकते हैं। वे पौधों की वृद्धि को प्रतिदिन दर्ज कर सकते हैं, चींटियों की गतिविधियों को देख सकते हैं, मौसम में होने वाले परिवर्तनों का रिकॉर्ड रख सकते हैं, चंद्रमा की कलाओं का अध्ययन कर सकते हैं या पक्षियों के व्यवहार का निरीक्षण कर सकते हैं। यदि वे एक विज्ञान डायरी बनाएँ और नियमित रूप से अपने अवलोकनों को लिखें, तो उनकी विश्लेषण क्षमता, धैर्य और तार्किक सोच में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है।

वैज्ञानिक अवलोकन केवल विज्ञान तक सीमित नहीं है। एक चिकित्सक रोगी के लक्षणों का सूक्ष्म अध्ययन करके सही उपचार निर्धारित करता है। एक अभियंता मशीनों की कार्यप्रणाली का निरीक्षण करके उन्हें अधिक प्रभावी बनाता है। एक पर्यावरण वैज्ञानिक जलवायु और जैव विविधता में हो रहे परिवर्तनों का अध्ययन करके संरक्षण की योजनाएँ तैयार करता है। यहाँ तक कि एक शिक्षक, कलाकार, पत्रकार, किसान और उद्यमी भी अपने कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए तीक्ष्ण अवलोकन क्षमता का उपयोग करते हैं।

आज के डिजिटल युग में सबसे बड़ी चुनौती यह है कि हमारा ध्यान लगातार मोबाइल फोन, सोशल मीडिया और डिजिटल स्क्रीन की ओर खिंचा रहता है। हम अपने आसपास घट रही रोचक और शिक्षाप्रद घटनाओं को अक्सर अनदेखा कर देते हैं। वैज्ञानिक अवलोकन की कला हमें धीमे चलना, ध्यानपूर्वक देखना, प्रश्न पूछना और सोच-समझकर निष्कर्ष निकालना सिखाती है। यह आदत हमें वास्तविक दुनिया से दोबारा जोड़ती है।

एक सच्चा वैज्ञानिक वही लिखता है जो वह वास्तव में देखता है, न कि जो वह देखना चाहता है। इसलिए वैज्ञानिक अवलोकन में ईमानदारी, सटीकता, बार-बार जाँच और तथ्यों का सही रिकॉर्ड रखना अत्यंत आवश्यक है। यही वैज्ञानिक पद्धति की सबसे बड़ी विशेषता है और यही विश्वसनीय ज्ञान का आधार भी।

माता-पिता और शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका है कि वे बच्चों को केवल उत्तर याद करने के लिए नहीं, बल्कि प्रश्न पूछने, प्रयोग करने और स्वयं अवलोकन करने के लिए प्रेरित करें। प्रकृति भ्रमण, विज्ञान प्रयोग, संग्रहालयों की यात्रा और पर्यावरण से जुड़ी गतिविधियाँ बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने के प्रभावी माध्यम हैं। जब बच्चों को देखने, सोचने और खोजने की स्वतंत्रता मिलती है, तब वे जीवनभर सीखने वाले बन जाते हैं।

आने वाला समय उन लोगों का होगा जो ध्यानपूर्वक अवलोकन कर सकें, तार्किक ढंग से सोच सकें और रचनात्मक समाधान खोज सकें। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में भी जिज्ञासा, अवलोकन, कल्पनाशक्ति और विवेक जैसी मानवीय क्षमताएँ सबसे अधिक मूल्यवान रहेंगी। इसलिए वैज्ञानिक अवलोकन की कला केवल वैज्ञानिकों के लिए नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक, विद्यार्थी और पेशेवर के लिए आवश्यक जीवन कौशल है।

अंततः, वैज्ञानिक अवलोकन हमें यह सिखाता है कि प्रकृति की हर वस्तु, हर घटना और हर परिवर्तन अपने भीतर एक कहानी छिपाए हुए है। जो व्यक्ति ध्यान से देखना सीख लेता है, वह दुनिया को केवल देखता ही नहीं, बल्कि उसे गहराई से समझने लगता है। वास्तव में, हर महान खोज की शुरूआत एक जिज्ञासु दृष्टि और एक सरल प्रश्न से होती है।

भूली हुई किताब की वापसी: 150 साल बाद पुस्तकालय में लौटी एक अनमोल धरोहर

पुस्तकें केवल कागज के पन्नों का संग्रह नहीं होतीं, बल्कि वे सभ्यता, संस्कृति, इतिहास और ज्ञान की जीवंत विरासत होती हैं। पुस्तकालय इन विरासतों के संरक्षक हैं, जहाँ पीढ़ियों का संचित ज्ञान सुरक्षित रहता है। हाल ही में एक ऐसी प्रेरणादायक घटना सामने आई जिसने पूरी दुनिया के पुस्तक प्रेमियों, इतिहासकारों और पुस्तकालय विज्ञान के विशेषज्ञों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। लगभग 150 वर्ष पहले पुस्तकालय से उधार ली गई एक पुस्तक आखिरकार अपने वास्तविक घर–पुस्तकालय–वापस पहुँच गई। यह घटना केवल एक "ओवरड्यू" पुस्तक की वापसी नहीं, बल्कि ज्ञान, ईमानदारी, जिम्मेदारी और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण का जीवंत संदेश है।

डेढ़ सौ वर्षों का अद्भुत सफर

कल्पना कीजिए कि एक पुस्तक, जिसे किसी पाठक ने लगभग 150 वर्ष पहले पुस्तकालय से लिया होगा, समय की लंबी यात्रा तय करते हुए आज फिर उसी पुस्तकालय की अलमारियों तक पहुँच गई। इन 150 वर्षों में दुनिया पूरी तरह बदल गई। औद्योगिक क्रांति का विस्तार हुआ, दो विश्व युद्ध हुए, अनेक देशों ने स्वतंत्रता प्राप्त की, विज्ञान और चिकित्सा में अभूतपूर्व प्रगति हुई, कंप्यूटर और इंटरनेट का युग आया और अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता (अक) का दौर है।

इन सभी परिवर्तनों के बीच वह पुस्तक सुरक्षित रही। संभव है कि वह एक परिवार से दूसरे परिवार तक विरासत के रूप में पहुँचती रही हो, किसी पुराने संदूक या पुस्तक अलमारी में वर्षों तक रखी रही हो, या किसी घर की सफाई के दौरान अचानक मिल गई हो। अंततः किसी व्यक्ति ने उसकी ऐतिहासिक महत्ता को समझते हुए उसे उसके वास्तविक स्थान–पुस्तकालय–लौटाने का निर्णय लिया। यह निर्णय केवल जिम्मेदारी का परिचायक नहीं, बल्कि ज्ञान के प्रति सम्मान का भी प्रतीक है।

यह केवल एक पुस्तक नहीं, इतिहास का दस्तावेज है

पुरानी पुस्तकें केवल पढ़ने की सामग्री नहीं होतीं। वे अपने समय की भाषा, संस्कृति, सामाजिक परिस्थितियों, वैज्ञानिक सोच और जीवन शैली की साक्षी होती हैं। उनके पन्नों पर लगे पुस्तकालय की मुहरें, पुराने हस्ताक्षर, पाठकों द्वारा बनाई गई टिप्पणियाँ और समय के निशान स्वयं इतिहास के महत्वपूर्ण दस्तावेज बन जाते हैं।

इतिहासकारों और शोधकताओं के लिए ऐसी पुस्तकें अमूल्य स्रोत होती हैं। इनके माध्यम से यह जाना जा सकता है कि किसी समय समाज क्या पढ़ता था, लोग किन विषयों में रुचि रखते थे और ज्ञान का प्रसार किस प्रकार होता था।

पुस्तकालयः ज्ञान के सच्चे संरक्षक

मानव सभ्यता के विकास में पुस्तकालयों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। प्राचीन काल के पुस्तकालयों से लेकर आधुनिक डिजिटल पुस्तकालयों तक, इन संस्थानों ने ज्ञान को सुरक्षित रखने और समाज तक पहुँचाने का कार्य किया है।

आज भी पुस्तकालय केवल किताबें उधार देने का स्थान नहीं हैं। वे शोध, अध्ययन, नवाचार, सांस्कृतिक गतिविधियों और आजीवन सीखने के केंद्र हैं। वे सभी वर्गों के लोगों को समान अवसर प्रदान करते हैं। यही कारण है कि किसी दुर्लभ पुस्तक की वापसी पूरे पुस्तकालय समुदाय के लिए उत्सव का विषय बन जाती है।

ईमानदारी का प्रेरक उदाहरण

इस घटना का सबसे प्रेरणादायक पक्ष वह व्यक्ति है जिसने पुस्तक लौटाने का निर्णय लिया। वह चाहे पुस्तक का वास्तविक उधारकर्ता न रहा हो, लेकिन उसने यह समझा कि यह पुस्तक व्यक्तिगत संग्रह की वस्तु नहीं, बल्कि सार्वजनिक धरोहर है।

आज के समय में जब भौतिक संपत्ति को अधिक महत्व दिया जाता है, यह घटना हमें सिखाती है कि नैतिक मूल्यों का महत्व कहीं अधिक है। किसी ऐतिहासिक वस्तु को उसके सही स्थान पर लौटाना समाज के प्रति जिम्मेदारी निभाने का उत्कृष्ट उदाहरण है।

डिजिटल युग में मुद्रित पुस्तकों का महत्व

आज लाखों पुस्तकें डिजिटल रूप में उपलब्ध हैं। मोबाइल फोन, टैबलेट और ई-रीडर के माध्यम से कहीं भी और कभी भी पढ़ा जा सकता है। फिर भी मुद्रित पुस्तकों का आकर्षण आज भी कम नहीं हुआ है।

पुरानी पुस्तक की स्याही की महक, पीले पड़ चुके पन्ने, हाथ से बनाई गई जिल्द और समय के निशान उसे विशिष्ट बनाते हैं। ऐसी पुस्तकें केवल जानकारी नहीं देतीं, बल्कि इतिहास को स्पर्श करने का अनुभव भी कराती हैं। यही कारण है कि दुर्लभ पुस्तकों का संरक्षण अत्यंत आवश्यक है।

नई पीढ़ी के लिए सीख

यह घटना विद्यार्थियों और युवाओं के लिए कई महत्वपूर्ण संदेश छोड़ती है। सबसे पहले, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। पुस्तकालय से ली गई पुस्तक को समय पर लौटाना केवल नियम का पालन नहीं, बल्कि दूसरों के अध्ययन के अधिकार का सम्मान भी है।

दूसरा, पढ़ने की आदत जीवनभर सीखने की प्रक्रिया को जीवित रखती है। पुस्तकें हमें केवल जानकारी नहीं देतीं, बल्कि सोचने, प्रश्न पूछने और बेहतर निर्णय लेने की क्षमता भी विकसित करती हैं।

तीसरा, इतिहास और विरासत का संरक्षण केवल सरकारों या संस्थानों की जिम्मेदारी नहीं है। प्रत्येक नागरिक इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

पुस्तकें समय से भी अधिक जीवित रहती हैं

मनुष्य का जीवन सीमित होता है, लेकिन पुस्तकें सदियों तक जीवित रह सकती हैं। वे पीढ़ियों को जोड़ती हैं। एक पुस्तक को पढ़ने वाला व्यक्ति शायद आज जीवित न हो, लेकिन उसके द्वारा पढ़ी गई वही पुस्तक आने वाली कई पीढ़ियों को प्रेरित कर सकती है।

150 वर्षों बाद लौटी यह पुस्तक इस बात का प्रमाण है कि ज्ञान कभी समाप्त नहीं होता। परिस्थितियाँ बदलती हैं, तकनीक बदलती है, लेकिन अच्छी पुस्तकें अपनी उपयोगिता और महत्व बनाए रखती हैं।

विरासत के संरक्षण की आवश्यकता

विश्वभर के पुस्तकालय आज दुर्लभ पुस्तकों के संरक्षण के लिए आधुनिक तकनीकों का उपयोग कर रहे हैं। डिजिटलीकरण, नियंत्रित तापमान, विशेष संरक्षण सामग्री और वैज्ञानिक विधियों के माध्यम से पुरानी पुस्तकों को सुरक्षित रखा जा रहा है। इसके साथ-साथ लोगों में जागरूकता बढ़ाना भी आवश्यक है ताकि वे अपने घरों में रखी पुरानी पुस्तकों और दस्तावेजों के ऐतिहासिक महत्व को समझ सकें और आवश्यकता पड़ने पर उन्हें संग्रहालयों या पुस्तकालयों तक पहुँचा सकें।

150 वर्षों बाद पुस्तकालय में लौटी यह भूली हुई पुस्तक केवल एक समाचार नहीं, बल्कि ज्ञान, ईमानदारी, जिम्मेदारी और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण का प्रेरक संदेश है। यह घटना हमें याद दिलाती है कि पुस्तकें समय की सीमाओं से परे होती हैं। वे पीढ़ियों को जोड़ती हैं, समाज को शिक्षित करती हैं और मानव सभ्यता की स्मृतियों को सुरक्षित रखती हैं।

आज जब दुनिया तेजी से डिजिटल होती जा रही है, तब यह घटना हमें पुस्तकों और पुस्तकालयों के महत्व को नए दृष्टिकोण से समझने का अवसर देती है। यदि हम अपनी ज्ञान-संपदा का सम्मान करेंगे, उसे सुरक्षित रखेंगे और आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाएँगे, तभी हमारी सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत सच्चे अर्थों में जीवित रह सकेगी।

वास्तव में, 150 वर्ष बाद अपने घर लौटी यह पुस्तक हमें यही सिखाती है कि ज्ञान कभी खोता नहीं, वह केवल अपने पाठकों की प्रतीक्षा करता है।

डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

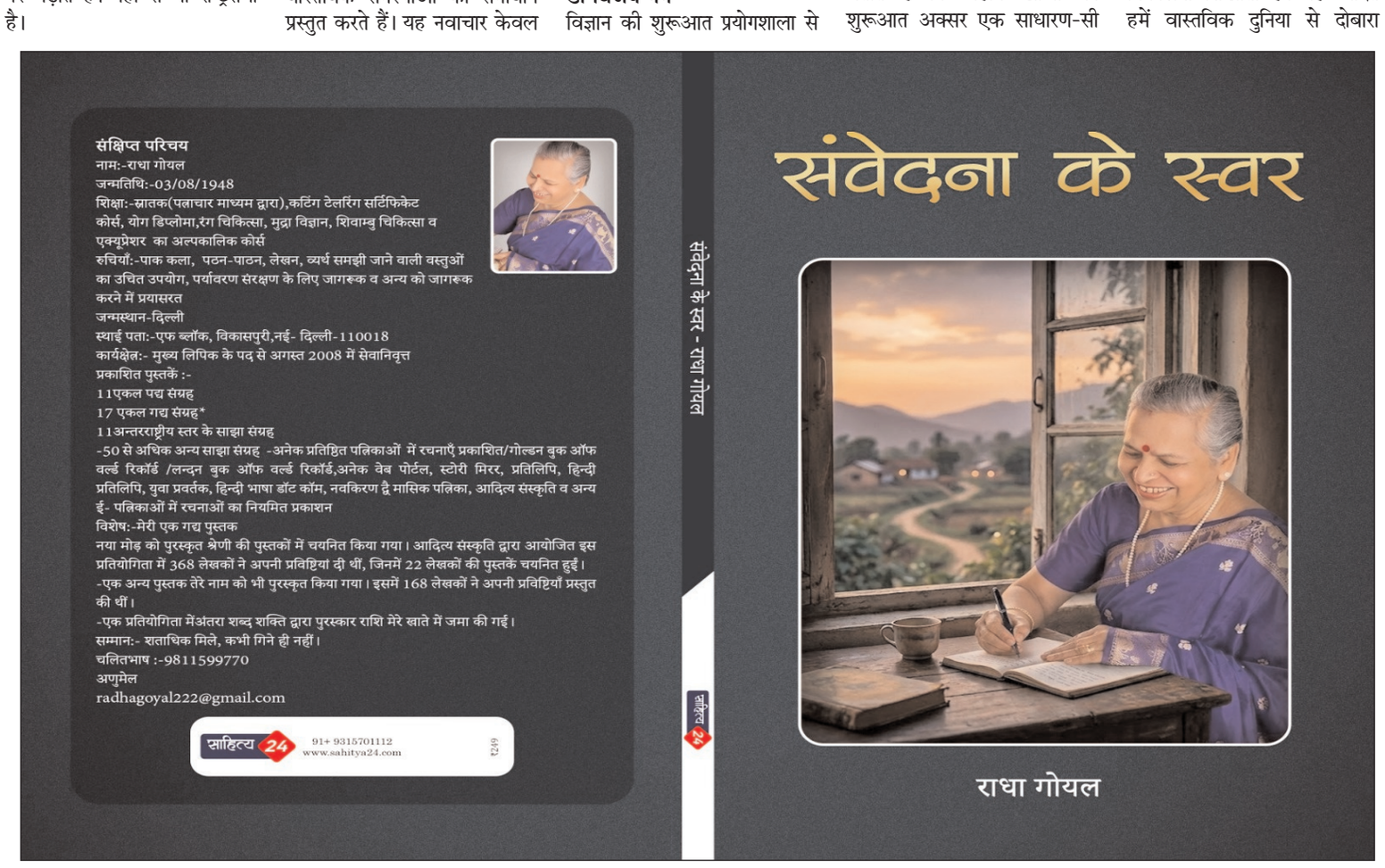

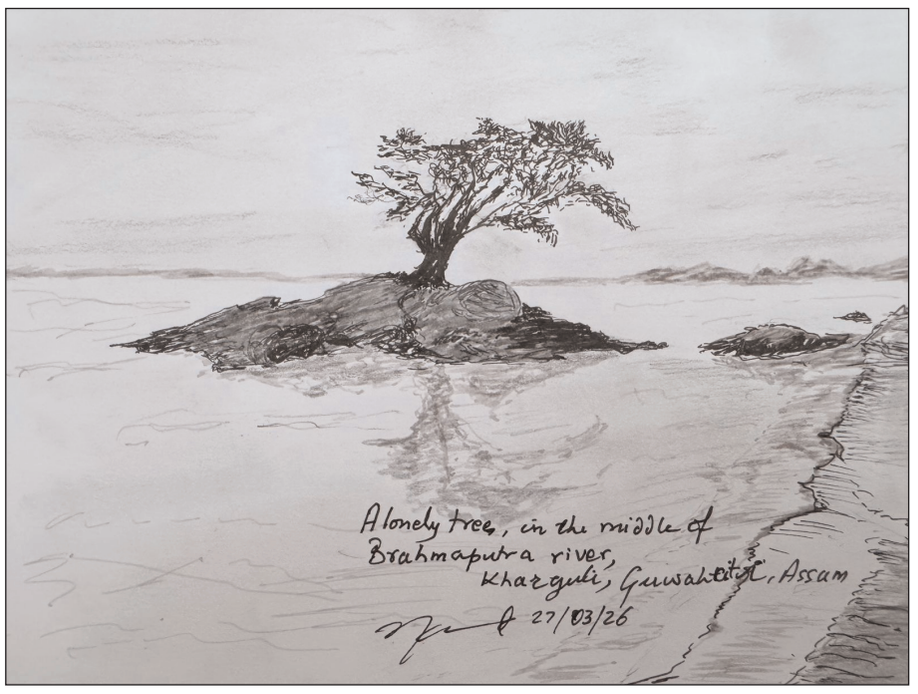

A lonely tree, in the middle of Brahmaputra river, Kharguli, Guwahati, Assam.